International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 06-01-2024, Accepted: 22-01-2024, Published: 07-02-2024
Volume 10, Issue 1, 2024, Page No. 11-14

गठबंधन सरकारः भारत में संघ एवम राज्यों के संदर्भ में तथ्यात्मक एवम विश्लेषणात्मक अध्ययन

सतीश कुमार पाठक
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय छत्रसाल महाराजा महाविद्यालय महाराजपुर छतरपुर, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश
संसदीय लोकतंत्र में गठबंधन आमतौर पर राजनीतिक बाध्यता का ही परिणाम होता है। ये सांप्रदायिक, धार्मिक,जातीय, क्षेत्रीय, भाषायी, नस्लीय, आर्थिक, सामाजिक अथवा राजनीतिक टकराव का परिणाम हो सकते हैं। राजनीति में आपातकालीन गठबंधन भी कभी कभी बन जाते हैं। भारत में संविधान निर्माताओं द्वारा, संसदीय शासन प्रणाली और बहुदलीय शासन व्यवस्था अपनाई गई है। इसमें मतदाताओं के पास विकल्प अधिक उपस्थित रहते है। भारत जैसे विशाल देश में जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र,विचारधारा आदि विविधता युक्त कारक है, जिसके परिणाम स्वरूप नए राजनीतिक दलों का निर्माण होना और उनमें परिस्थिति अनुसार गठबंधन होना स्वाभाविक है।

मुल शब्दः गठबंधन सरकार, राजनीतिक बाध्यता, आपातकालीन गठबंधन

भूमिका
गठबंधन का अंग्रेजी शब्द 'कोआलिशन, लैटिन भाषा से लिया गया है,जिसका अर्थ है साथ चलना, गठबंधन में बंधना या एकजुट होना। भारतीय संविधान द्वारा संघीय और प्रादेशिक स्तर पर संसदीय शासन को अपनाया गया है। संसदीय शासन में संघीय और प्रादेशिक स्तर पर विधायक के लोकप्रिय सदन (लोकसभा या विधानसभा) के निर्वाचन होते हैं। राजनीतिक दलों के बीच चुनाव पूर्व और चुनाव के बाद भी गठबंधन होते हैं। जब चुनाव में किसी एक राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलता और त्रिशंकु लोकसभा या विधानसभा(खंडित जनादेश) की स्थिति बनती है, तो राजनीतिक दलों के बीच गठबंधन की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है और गठबंधन का नेता मिली जुली सरकार का गठन करता है।जब कभी राजनीतिक दलों को यह आभास हो जाता है कि चुनाव में विधायक के लोकप्रिय सदन में अकेले स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं होगा तो राजनीतिक दल चुनाव पूर्व गठबंधन कर लेते हैं और न्यूनतम सहमति मूलक कार्यक्रम अपनाने का प्रयास करते हैं।

गठबंधन राजनीति के उदय के कारण
भारत में गठबंधन राजनीति के उदय के निम्न प्रमुख कारण रहे है–

- 1989 तक आते आते कॉन्ग्रेस का प्रभाव कम हो जाना।
- क्षेत्रीय और जातीय गोलबंदी के आधार पर राजनीतिक दलो की संख्या बढ़ जाना, विशेषकर
- उत्तरप्रदेश, बिहार, तमिलनाडु जैसे राज्यों में कुछ अधिक ही ये तत्व देखने को मिलते है।
- दल बदल की बढ़ती प्रवृत्ति
- राजनीतिक दलों में वैचारिकी की जगह सत्ता लोलुपता की बढ़ती भावना।
- राजनीतिक अस्थिरता

गठबंधन सरकारों की विशेषताएं
- गठबंधन सरकार में दो या दो से अधिक राजनैतिक दल भागीदार होते हैं।
- गठबंधन राजनीतिक हितों की प्राप्ति पर आधारित होता है, जो की सारभूत या मनोवैज्ञानिक
- रूप में प्राप्त हो सकता है,।
- यह अस्थाई संक्रमणकालीन व्यवस्था है, क्योंकि गठबंधन में शामिल प्रत्येक राजनीतिक दल
- अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए,सहयोगी दलों के साथ पर्दे के पीछे राजनीति करते रहते हैं और उसे अस्थिर करने का प्रयास करते है।
- गठबंधन सरकार न्यूनतम सहमति कार्यक्रम पर आधारित होती है।
- सिद्धांतो की जगह व्यहारिक परिस्तिथियां ही निर्णायक प्रभाव पैदा करती है।
- इसमें अवसरवादी गतिशीलता पाई जाती है,जो राजनीतिक दल आज सहयोगी है,कल
- विरोधी हो सकते है और जो कल विरोधी थे आज सहयोगी हो सकते है।

गठबंधन के सकारात्मक पक्ष
गठबंधन सरकार में शामिल राजनीतिक दलों में परस्पर सहयोग की भावना होती है।
इसमें विभिन्न विचार धारा वाले राजनीतिक दल साथ आकर, सामाजिक और क्षेत्रीय समूहों में फैली दूरियां या वैमनुष्यता को कम करते है।
एक दल अपनी निरंकुशता नही थोप सकता क्योंकि सामूहिक सहमति बनाना आवश्यक होता है।
संघात्मकता को अधिक प्रासंगिक बनाता है, जिससे संघीय और प्रादेशिक स्तर पर सौहार्द्र व समन्वय के साथ बेहतर समझ निर्मित होती है।
सरकार निरंकुश नही बन पाती।
दूसरे दलों के अनुभवी व योग्य राजनीतिक व्यक्तियों का लाभ सरकार को मिलता है।

नकारात्मक पक्ष
- इसमें संकीर्ण राजनीतिक हितों को बढ़ावा दिया जाता है।
- दलगत हित, जनसाधारण के हितों के ऊपर हो जाते है।
- भारतीय संदर्भ में गठबंधन सरकारे अक्सर अस्थिर और कमजोर ही रही है।
- गठबंधन के घटक दल, सुचिता और सिद्धांतो की परवाह न करके तात्कालिक व्यावहारिक हितों को वरीयता देते है।
- घटक दल लगातार दवाब की राजनीति अपनाते है, जैसे भारत अमेरिका परमाणु समझौते के

- मुद्दे पर संयुक्त प्रगतिशील गठंबधन पर वाम दलों ने पहले दवाब बनाया फिर समर्थन वापिस लेकर सरकार को संकट में डाल दिया था।
- कभी कभी घोर विरोधी विचारधारा के राजनीतिक दलों में भी गठबंधन हो जाता है,जैसे जम्मू
- कश्मीर में भारतीय जनता पार्टी और पीडीपी का गठबंधन
- महाराष्ट्र में शिवसेना कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी का गठंबधन।
- गठबंधन में शामिल दल, धार्मिक, क्षेत्रीय, जातीय और भाषाई तुष्टीकरण की नीति अपनाने से
- हिचकते नही है, कभी कभी ये राष्ट्रीय एकता अखंडता के ऊपर भी इसको तरजीह देते देखे गए हैं।
- उत्तरदायित्व का निर्धारण नही हो पाता।
- घटक दल किसी भी दोषपूर्ण कार्य के लिए एक दूसरे पर दोषारोपण करते है।
- राजनीति के अपराधीकरण को बढ़ावा दिया जाता है।
- विभिन्न विभागों व मंत्रालयो में सामंजस्य नही बैठ पाता है।

जिन देशों में जनता आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक जातीय दृष्टि से विकृत रूप से विभाजित नही है वहां गठबंधन सरकार सफल देखी गई है और जहां ये विभाजन पाया जाता है खासकर विकासशील राष्ट्रों में, वहां अस्थिर और असफल देखी गई है।
शिक्षा,नागरिक समाज की जागरूक भूमिका और सक्रियता से गठबंधन पर सकारात्मक जनदवाब बनता है। स्पष्ट नीति और दीर्घकालीन विकास के लिए पूर्ण बहुमत जरूरी है।

संघीय स्तर पर गठबंधन।

आजादी के बाद कांग्रेस प्रमुख पार्टी थी और एक लम्बे समय तक, खासकर 1977 तक, कांग्रेस को कोई खास चुनौती उत्पन्न नही हुई। 1977 के लोकसभा चुनाव में केंद्र में किसी भी राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नही होता है।, यह चुनाव इंदिरा गांधी द्वारा 1975 में घोषित आपातकाल के विरोध में लड़ा गया था और भिन्न भिन्न विचारधारा वाले दल गठबंधन बना कर सत्ता में आए थे (मोरारजी देसाई प्रधान मंत्री बने)। जिससे यह सरकार अपना पूरा कार्यकाल नही कर सकी। यह पहली गैर कांग्रेसी केंद्रीय सरकार थी,जिसमे 13 घटक दल थे। बाद में गठबंधन सरकार में ही चौधरी चरण सिंह प्रधान मंत्री बने,जो कि 1980 तक ही सत्ता सीन रहे।जब विचारात्मक समानता या स्थायित्व नही होता और सत्ता, महत्वाकांक्षा ही सब कुछ हो जाता है तो ऐसी सरकारों का पतन भी शीघ्र होता है और यही हुआ। 1980 और 1984 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ। इससे भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में भी स्थिरता देखी गई। 1989 के चुनाव में कांग्रेस मात्र 197 सीट ही जीत सकी और कांग्रेस" प्रणाली सिस्टम "का अंत होता है। यहां से कांग्रेस के प्रभाव में ह्रास प्रारंभ होता है।हालांकि किसी अन्य राजनीतिक दल की तुलना में कांग्रेस ही,ज्यादातर समय तक, केंद्र में शासक रही,लेकिन पहले जैसी मजबूत स्थिति को प्राप्त नही कर सकी।1989 के आम चुनाव के बाद राष्ट्रीय मोर्चे की गठबंधन सरकार बनी,इसमें धुर विरोधी भारतीय जनता पार्टी और वामदल भी शामिल थे। बीपी सिंह प्रधान मंत्री बने लेकिन मंडल कमीशन के मुद्दे पर यह सरकार भी गिर गई।
1990–91 में जनता दल (सोशलिस्ट) की गठबंधन सरकार में चंद्रशेखर प्रधान मंत्री बनते है,लेकिन यह गठंबधन भी महज कुछ महीने ही चल पाता है। 1991 के लोकसभा चुनाव के बाद केंद्र में कांग्रेस के नेतृत्व में स्थिर गठबंधन सरकार बनी और पीवी नरसिंह राव प्रधानमंत्री बने,इस सरकार ने अपना पूरा कार्यकाल किया।
1996 के लोकसभा चुनाव में फिर से अस्थिर गठबंधन सरकार बनी, (बीजेपी केअटल बिहारी वाजपई प्रधानमंत्री बने)जो कि मात्र 13 दिन तक ही चल सकी। इसके बाद 13 दलों ने मिलकर एचडी देवगौड़ा के नेतृत्व में सरकार बनाई, जो कि दस महीने ही चल सकी। इसके बाद इंद्र कुमार गुजराल प्रधान मंत्री बने।ये दोनो मिली जुली सरकारे(देवगोड़ा और गुजराल सरकार)कांग्रेस के समर्थन वापिसी के चलते गिर जाती है। इसके बाद की भारतीय राजनीति में काफी स्थिर गठबंधन देखने को मिले।1998 के आम चुनाव के पहले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) बना,जिसमे 13 दल शामिल हुए। यह एक राजनीतिक गठबंधन है,जिसका नेतृत्व भारतीय जनता पार्टी करती है।
सरकार भी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की ही बनी लेकिन एआईडीएमके के समर्थन वापिसी के चलते यह सरकार भी 13 महीने ही अपना कार्यकाल पूर्ण कर सकी।
1999 में फिर से चुनाव हुए और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ।
इस गठबंधन में 24 दल शामिल थे, फिर से बीजेपी के अटल बिहारी बाजपाई प्रधानमंत्री बने।इस सरकार ने लगभग अपना पूरा कार्यकाल किया।समय से पहले आम चुनाव(2004 में) करवाने का फैसला एनडीए के लिए उल्टा पड़ गया और गठबंधन को सत्ता गंवानी पड़ी।
2004 के लोकसभा चुनाव के बाद संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) बना। इस राजनीतिक गठबंधन का नेतृत्व कांग्रेस पार्टी करती है।
हालांकि यह गठबंधन और कांग्रेस पार्टी, सोनिया गांधी को प्रधानमंत्री बनाना चाह रही था लेकिन अंततः मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री बनते है।
,इस सरकार को बाहर से वाम दल और समाजवादी पार्टी समर्थन दे रही थी।
2008 में भारत अमेरिका परमाणु समझौते को लेकर जब वाम दलों ने समर्थन वापिस लिया तो सरकार बचाने में सपा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
2009 के आम चुनाव में यूपीए फिर से सत्तासीन हुआ और दूसरा कार्यकाल भी पूर्ण किया लेकिन गठबंधन में शामिल घटक दलों के महत्वपूर्ण मंत्रियों पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगना, एफआईआर दर्ज होना, सीएजी की रिपोर्ट में भी गंभीर अनियमितताओ को लेकर इस गठबंधन के प्रति व्यापक जना क्रोश देखा गया। जिसने आगामी एनडीए गठबंधन सरकार के लिए नींव तैयार कर दी।
2014 के लोकसभा चुनाव बीजेपी ने नरेंद्र मोदी को प्रधान मंत्री प्रोजेक्ट करके लड़ा, उसके राजनीतिक कैरियर में मील का पत्थर साबित हुआ और 1984 के बाद किसी राजनीतिक दल ने अकेले ही पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने में कामयाबी पाई हालांकि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ही सत्तासीन हुआ और मोदी प्रधानमंत्री बने।
2019 में फिर से राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन चुनाव जीता (अकेले ही बीजेपी को फिर से पूर्ण बहुमत हासिल हुआ।) गठबंधन सहयोगियों के साथ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सत्तासीन हुआ
मोदी फिर से प्रधान मंत्री बने। इस सरकार को गठबंधन के दवाब से मुक्त कार्यप्रणाली से कार्य करते हुए देखा गया।
गठनबंधन की राजनीतिक सौदेबाजी और ढुलमुल रवैया का असर भी कम हुआ।
2024 के चुनाव पूर्व संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए)ने अपना नाम बदलकर इंडिया (पदकपं) रख लिया है। इस गठबंधन में आश्चर्यजनक तथ्य शिवसेना का शामिल होना है क्योंकि इसमे अधिकतर धर्मनिरपेक्ष दल या मुस्लिम सॉफ्ट कॉर्नर वैचारिकी वाले दल रहे है।

इस गठबंधन में जहां वाम दलों में आर्थिक नीतियों को लेकर सहमति नही दिख रही है,वही आम आदमी पार्टी और तृणमूल कांग्रेस में सामाजिक, राजनीतिक दावों को लेकर सहमति नही दिखती है, क्षेत्रीय दल भारत को अधिक संघीय बनाने को प्रयासरत है ही।

वही कुछ दल केवल सत्ता में हिस्सेदारी को ज्यादा तरजीह दे रहे है। सीटो का बंटवारा भी बड़ा पेचीदा प्रश्न है।

वर्तमान में इंडिया गठबंधन के प्रमुख पैरोकार जदयू प्रमुख नीतीश कुमार एनडीए में फिर से शामिल हो गए है,जिससे इस गठबंधन की उम्मीदों को बड़ा धक्का लगा है।

राज्यों में गठबंधन राजनीति

राज्य स्तर पर गठबंधन सरकारों का वक्त 1967 से प्रारंभ होता है। 1962 में चीन के हाथो भारत की पराजय, बढ़ती महंगाई और नेहरू जी के बाद प्रभावशाली व्यक्तित्व के अभाव के कारण कांग्रेस के जन समर्थन में कमी आई।

1967 –70 के काल में मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश उड़ीसा, पश्चिम बंगाल,बिहार,केरल, पंजाब में संविद सरकारे बनी।

इन गठबंधन सरकारों में राजनीतिक अस्थिरता, भ्रष्टाचार, दलबदल, प्रशासनिक अनिश्चितता जैसी कमियों ने गठबंधनों की सार्थकता पर प्रश्न चिन्ह खड़े किए।

1992 के बाबरी विध्वंस और राम मंदिर आंदोलन के बाद उत्तरप्रदेश में 1993 के विधान सभा चुनाव बाद समाजवादी पार्टी (सपा) बहुजन समाजवादी पार्टी (बीएसपी) ने मिलकर सरकार बनाई जोकि 1995 तक ही चल सकी।

इसके बाद मायावती ने बीजेपी के समर्थन से सरकार बनाई लेकिन यह गठबंधन भी राजनीतिक अवसरवादिता व अस्थिरता के अतिरिक्त कुछ विशेष नही कर सका। हाल के वर्षो में सपा + बीएसपी, सपा + आरएलडी, सपा + कांग्रेस के साथ बीजेपी भी छोटे दलों के साथ गठबंधन करती रही है।

वर्तमान में उत्तरप्रदेश, गठबंधन दौर से बाहर निकल आया है और बीजेपी की पूर्ण बहुमत की सरकार अपना दूसरा कार्यकाल पूर्ण कर रही है।

मध्यप्रदेश में 1967 में डीपी मिश्र के नेतृत्व में गठित सरकार के अपदस्थ होने के बाद,गोविंद नारायण सिंह पहली गठबंधन सरकार बनाकर मुख्यमंत्री बने थे।

2019 विधान सभा चुनाव के बाद कांग्रेस के नेतृत्व में गठबंधन सरकार बना कर कमलनाथ की अस्थिर सरकार अपना कार्यकाल पूर्ण नही कर सकी। कांग्रेस के ही विधायको ने अपना पाला बदलकर सरकार को गिरा दिया।

हालांकि एमपी में ज्यादातर पूर्ण बहुमत की सरकारें ही बनी है।

केरल में 1967 के पूर्व भी मिली जुली सरकारे बनी थी।1967 के बाद भी वाम दलों और मुस्लिम लीग ने संयुक्त सरकार बनाई लेकिन राजनीतिक स्थिरता नही दे पाई।

केरल वर्तमान में गठबंधन सरकार का सफलता पूर्वक निर्वहन करके राज्य में स्थिरता और विकास करने वाला अग्रणी राज्य बनकर उभरा है।

महाराष्ट्र में 1999 के विधानसभा चुनाव के बाद कांग्रेस एनसीपी गठबंधन की मिली जुली सरकार बनी।विचारधारात्मक समन्वय के कारण कांग्रेस + राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) और बीजेपी + शिवसेना की गठबंधन सरकारे पर्याप्त स्थिरता की स्थिति में देखी गई।

लेकिन 2019 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के बाद घटे अभूतपूर्व घटनाक्रम मे, चुनाव पूर्व बने भाजपा– शिवसेना गठबंधन और एनसीपी –कांग्रेस गठबंधन में बड़ा उलट फेर देखने को मिला। विपरीत विचारधारा के होने के बावजूद शिवसेना ने कांग्रेस, एनसीपी से गठबंधन कर,महा विकास अघाडी गठबंधन बनाकर सरकार बनाई और उद्धव ठाकरे मुख्यमंत्री बने लेकिन 2022 में शिवसेना से ही बगावत कर एकनाथ शिंदे बीजेपी के सहयोग से मुख्यमंत्री बन गए लेकिन अभी वर्तमान में भी इस राज्य में ऊहापोह की स्थिति चल रही है।

बिहार में 2000 के विधानसभा चुनाव के बाद रावड़ी देवी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनता दल(राजद),कांग्रेस, बीएसपी की मिली जुली सरकार बनी।सरकार का गठन विवाद पूर्ण जटिल परिस्थितियों में हुआ था।

वर्तमान में भी बिहार विधानसभा चुनाव 2020 के बाद बिहार कभी जनता दल यूनाइटेड (जदयू) + बीजेपी और कभी जद यू + राजद गठबंधन के राजनीतिक भंवर जाल में फंसा हुआ है।

इसके साथ ही लोक जनशक्ति पार्टी और हम जैसी छोटी पार्टियां भी अपना प्रभाव रखती है।

अर्थात बिहार में राजनीतिक स्थिरता अर्थात किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं है।

राज्य स्तर पर गठबंधन सरकारों की निम्न विशेषताएं रही है

- सरकार के घटक दलों में विचारधारात्मक एकता का अभाव रहा।
- मंत्रिमंडल और मुख्यमंत्री की प्रतिष्ठा में कमी आई।
- संसदीय शासन की मर्यादाओं का उल्लंघन हुआ–राजनीतिक अस्थिरता देखी गई।
- राज्यपाल की विवादास्पद भूमिका बड़ी।
- संघ और प्रादेशिक स्तर पर तनाव बड़ा है।

राज्य स्तर पर हुए प्रारंभिक गठबंधनों के दौर को छोड़ दिया जाए तो यह मिली जुली सरकारे उतनी निराशाजनक नही रही जितनी कि केंद्रीय स्तर पर।उनकी असफलताएं उतनी ही है, जितनी की एकदलीय स्पष्ट बहुमत की सरकारों की।

लेकिन संघीय स्तर पर गठबंधन सरकारों ने बहुत हताश और निराश किया है।

1977– 80 और 1989– 90 के बाद त्रिशंकु लोकसभा और खंडित जनादेश ने संघीय स्तर पर अपेक्षाकृत परिणाम नही दिए।

2004 के बाद हालांकि गठंबधन स्थिरता देखी गई और यूपीए ने दोनो कार्यकाल पूर्ण किए।

परमाणु समझौते को लेकर सरकार गिराने की कोशिश भी गठंधन के सहयोगियों ने की।

2014 और 2019 के आम चुनाव में मोदी प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित हुआ और बीजेपी के नेतृत्व में एनडीए ने दोनो कार्यकाल सफलता पूर्वक पूर्ण किए।

- गठबंधन सरकारों में अस्थिरता के साथ सत्तालोलुपता और अति महत्वा कांक्षा देखी गई, जो कि राष्ट्र या राज्य के लिए हित कर नही है,।
- चूंकि भारतीय समाज में पाई जाने वाली विविधता और बहुदलीय शासन व्यवस्था नवीन राजनीतिक दलों के निर्माण को प्रोत्साहित करती है।
- क्षेत्रीय दलों की पैठ जैसे ही राज्यों या जनता के बीच बढ़ती जाएगी,वैसे ही हमे भविष्य का मार्ग गठबंधन में भी खोजना आवश्यक होता जाएगा,जिसके लिए निम्न सुझाव हो सकते है–
- गठबंधन में शामिल राजनीतिक दलों के राष्ट्रीय लक्ष्य होने चाहिए,जिस पर आम सहमति बनाई जा सके
- चुनाव पूर्व बनाए गए गठबंधन ही उचित कहे जा सकते है क्योंकि इसमें कुछ हद तक वैचारिक साम्यता होती है।
- चुनाव बाद बने गठबंधन सत्ता की हिस्से दारी के दावेदार ही अधिक साबित हुए है।
- बाहरी समर्थन के आधार पर गठित सरकारें अपनी प्रकृति से ही अस्थाई होती है। यह लोकतंत्र के भी विरुद्ध है जिसमें

बाहर से समर्थन करने वाले दल निरंतर दवाब की राजनीति करते है और जवाबदेही भी नही होती है।

- उन्हें सरकार में शामिल होने के लिए बाध्यता होनी चाहिए।
- गठबंधन की सफलता के लिए जरूरी है, कि नेतृत्व वरिष्ठ और अनुभवी राजनीतिज्ञ करे ताकि नौकरशाही भी अनावश्यक हस्तक्षेप न कर पाए।
- सरकारों के गठन और कार्य प्रक्रिया पर गंभीर,जवाबदेही युक्त विमर्श होना चाहिए।

संदर्भ

1. डा. अजय मलिक, (2018)" गठबंधन की राजनीति तथा भारतीय राजनीतिक व्यवस्था" राधा पब्लिकेशंस दिल्ली, आईएसबीएन–10
2. जे श्यामसुंद्रम,सीपी शर्मा, (2001–2002) "राजनीति विज्ञान" राम प्रसाद एंड संस आगरा
3. डा. पुखराज जैन, (2001) "राजनीति विज्ञान",साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा
4. डा ओम नामपाल, (2001 2002) "राजनीतिविज्ञान के मूल तत्व भारत का राष्ट्रीय आंदोलन शासन और राजनीति" कमल प्रकाशन इंदौर
5. डा. सत्यनारायण मंडल, (अगस्त 2020)" भारत में गठबंधन सरकार–:एक विश्लेषण" जे ई टी आई आर (JETIR) 7(8).
6. डा. एमडी जोहा सिद्दकी, (अगस्त 2020), "भारत में गठबंधन सरकार की सार्थकता" जे ई टी आई आर (JETIR) 7(8).
7. दैनिक जागरण, (18जून 2023), coalition Govt in India.